CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Jan. 2022, Revised on 27th Feb. 2022, Accepted 27th Mar. 2022

शोध–आलेख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 के सन्दर्भ में ज्ञानरचनावाद का दार्शनिक विश्लेषणात्मक एक अध्ययन

* सुनीता चौहान
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग
साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)
E-Mail- sunitachouhan201085@gmail.com, Mob.- 9352990098

मुख्य शब्द– *स्कूल–पाठ्यक्रम, व्यक्ति–सापेक्ष पाठ्यक्रम, ज्ञानरचनावाद आदि।*

प्रस्तावना

वे पुस्तकें जो आपकी सबसे अधिक सहायता करती हैं
वे हैं, जो आपको सबसे ज्यादा सोचने पर विवश करती हैं
(थियोडोर पार्कर)

संसार के प्रत्येक शिक्षाविद ने शिक्षा के लक्ष्यों के प्रति अलग अलग दृष्टिकोण होते हुए भी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मक विकास ही माना है साथ ही शिक्षा को सामाजिक विकास का भी मुख्य साधन भी स्वीकार किया गया शिक्षा के अन्तर्गत, व्यक्ति समाज और वातावरण आदि का भी महत्वपूर्ण स्थान है, किसी भी देश का स्कूल–पाठ्यक्रम उसके संविधान की भांति उसकी आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। समाज और व्यक्ति–सापेक्ष पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए लचक और गतिशीलता का होना अनिवार्य है! अन्यथा तीव्रता से विस्तारमान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज्ञान और हमारे समाज की बदलती सामाजिक–आर्थिक स्थिति के समक्ष किसी भी पाठ्यक्रम का जीवन क्षणिक रह जाने की सम्भावना है।

विलसन और कोल (1991), जॉनसन (1994) में भी ''ज्ञानरचनावाद के प्रभाव एवं अनुदेशनात्मक प्रारूप'' तथा ''संज्ञानात्मक शिक्षण का ज्ञानरचनावाद प्रत्यय'' में इन्होंने अपने शोध अध्ययन में पाया की बच्चों के अधिगम के लिए प्रमाणिक शैक्षिक तत्व उपलब्ध करवाये जाने चाहिये एवं सीखने वाले बच्चों को नियंत्रित अधिगम उपलब्ध करवाने व विशेष वातावरण में सीखने के लिए तैयार किये जाने की आवश्यकता है।

अतः समान स्तर और राष्ट्रीय पहचान पाने के लिए स्वीकृत सिद्धान्तों और मूल्यों की विस्तृत रूपरेखा के ही अन्तर्गत एक समान पाठ्यक्रम का विकास अनिवार्य होने चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को संशोधित करने का निर्णय लिया इसी क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा सचिव ने परिषद् के निदेशक को एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने 1993 की ''शिक्षा बिना बोझ के'' रपट की रोशनी में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 की समीक्षा करने की आवश्यकता व्यक्त की। इन्हीं निर्णयों के संदर्भ में प्रोफेसर यशपाल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय संचालन समिति और इक्कीस राष्ट्रीय फोकस समूहों का गठन किया गया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के निर्देशक सिद्धान्त

- ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
- पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को चहुंमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि पाठ्यपुस्तक केंद्रित बन कर रह जाए।
- परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
- एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य–व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हो।

ज्ञानरचनावाद

शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान में समसामयिक चिंतन के रूप में हम ज्ञानरचनावाद को ऐसे विचार के रूप में देख सकते हैं जो 2500 वर्षों पूर्व संशयवादियों द्वारा परम्परागत ज्ञानमीमांसा के प्रति उठाई गई आपत्तियों को अपना वैचारिक आधार मानता है, बर्कले, कान्ट और वायको के चिन्तन से प्रभावित होकर मानवीय ज्ञान निर्माण या सृजन क्षमता को नए अर्थों में परिभाषित करने का प्रयास करते हुए ज्ञानरचनावाद जीन प्याजे के संज्ञानात्मक मनोविज्ञान को आधार में रखकर आगे बढ़ता है। ज्ञानरचनावाद में व्यक्ति किन नवीन विचारों को स्वीकार करें व संसार के विषय में स्थापित विचारों में उन्हें किस प्रकार समायोजित करे, से सम्बन्धित विकल्पों का चयन ही ज्ञानरचनावाद है। ज्ञानरचनावाद शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा मनोविज्ञान दोनों से जुड़ी वैचारिक समस्याओं पर समीक्षात्मक विवेचन करता हुआ जानने, समझने और सीखने को कुछ नये ढंग से परिभाषित करने का प्रयास करता है। ज्ञान की विषयवस्तु जितनी अधिक विविधता पूर्ण है उतनी ही अधिक विविधता सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में भी है। ज्ञान की कोई निश्चित,अन्तिम व सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती क्योंकि ज्ञान मानवीय अनुभवों को क्रमबद्ध और व्यवस्थित किये जाने का नाम है। आनुभाविक जगत जितना व्यवस्थित और व्यापक होगा ज्ञान में उतनी ही विश्वसनीयता और उपादेयता समाहित होगी।

अधिगम के निम्न तथ्य और अधिनियम ज्ञानरचनावाद से उद्भव हुए –

- अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है। अधिगमकर्त्ता ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करते हुए अर्थ की संरचना करता है। अधिगम निष्क्रिय रहकर एक बार ज्ञान को स्वीकारने की प्रक्रिया नही है। अधिगम विद्यार्थी की बाह्य संसार के साथ संलग्न होने की प्रक्रिया है।
- अधिगम कैसे किया जाता है, इसे बच्चे अधिगम करते समय सीखते है। अधिगम में अर्थ की संरचना के साथ–साथ अर्थ की सरंचना प्रणाली भी सम्मिलित है।

- अधिगम के लिए, शारीरिक क्रियाओं के साथ–साथ मस्तिष्क को भी संलग्न करने की आवश्यकता है। डीवी ने इसे चितंनयुक्त प्रक्रिया कहा है।

ज्ञानरचनावाद अधिगम के प्रकार

- संज्ञानात्मक ज्ञानरचनावाद–संज्ञानात्मक ज्ञानरचनावाद व्यक्ति के द्वारा अर्जित ज्ञान, विश्वास, मूल्य, धारणाओं, आत्मप्रत्यय पर ध्यान केन्द्रित करता है।
- सामाजिक ज्ञानरचनावाद – जैरोम ब्रूनर ने माना अधिगम एक सक्रिय सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी नये विचारों व अवधारणों को वर्तमान ज्ञान के आधार पर निर्मित करते हैं।

  हम एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और इस पर आधारित पुस्तकों को सराहना चाहेंगे। एन.सी.ई.आर.टी. ने इस दिशा में जो नई पहल की है उससे भारतीय विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आशा की जा सकती है। एन.ई.पी. 2020 का मुख्य उद्देश्य व लक्ष्य 'भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है' तथा भारत में शिक्षा का सार्वभौमिकरण कर शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च करना है इसमें ई–लर्निंग, ई–पाठ्यक्रम तथा ई–डिजिटल लर्निंग के लिए छम्ज्थ्(राष्ट्रीय प्रौघ्योगिकी मंच) बनाया गया।

समस्या का औचित्य

क्या राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कुछ ऐसी बातें है जो ज्ञानरचनावाद से अलग हैं? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु शोधार्थी ने **गोस्वामी आयुष्मान (2012) द्वारा** ''बॉन ग्लेशियर फील्ड और ज्ञानरचनावाद का दार्शनिक विश्लेषण'' इन्होंने अपने शोध अध्ययन में बॉन ग्लेशियर फील्ड के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक विचारों का ज्ञानरचनावाद के सन्दर्भ में अध्ययन किया। क्या ज्ञानरचनावाद का संबंध ज्ञान की अवधारणा पर आधारित है? राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी.2020 में निहित शैक्षिक उद्देश्य और विचारधारा जैसे ज्ञान की प्रकृति, बच्चों के सीखने की कार्यनीति, ज्ञान सृजन के लिए अध्यापन, शैक्षिक अनुभवों तथा शिक्षक व्यवसाय की रूपरेखा ज्ञान एवं समझ, पूर्व ज्ञान को फिर से जोड़ना, बच्चों का स्थानीय ज्ञान, विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण, पाठ्यचर्या के स्थल व अधिगम संसाधन और ज्ञानरचनावाद में कोई सम्बन्ध है?इन प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया और पाया कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और ज्ञानरचनावाद पर विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग कार्य तो हुआ है लेकिन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 और ज्ञानरचनावाद पर सम्मिलित कार्य नहीं हुआ है। अतः शोधार्थी ने **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 के सन्दर्भ में ज्ञानरचनावाद का दार्शनिक विश्लेषणात्मक एक अध्ययन** करने का मानस बनाया।

समस्या कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 के सन्दर्भ में ज्ञानरचनावाद का दार्शनिक विश्लेषणात्मक एक अध्ययन

शोध समस्या से उभरने वाले प्रश्न

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के निर्देशक सिद्धान्त क्या हैं?
- दस्तावेज राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व **एन.ई.पी. 2020** क्या किसी विचारधारा पर आधारित है?
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व **एन.ई.पी. 2020** का वैशिष्टय क्या हैं?
- ज्ञानरचनावाद क्या हैं?
- ज्ञानरचनावाद का दार्शनिक आधार क्या हैं?

- ज्ञानरचनावाद का सामाजिक आधार क्या हैं?
- ज्ञानरचनावाद का मनोवैज्ञानिक आधार क्या हैं?
- ज्ञानरचनावाद की ज्ञान सम्बन्धी अवधारणा क्या है?
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व **एन.ई.पी. 2020** और ज्ञानरचनावाद में क्या सम्बन्ध है?

शोध के उद्देश्य

- ज्ञानरचनावाद की दार्शनिक विचारधारा का अध्ययन करना।
- ज्ञानरचनावाद की मनोवैज्ञानिक विचारधारा का अध्ययन करना।
- ज्ञानरचनावाद की सामाजिक विचारधारा का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 में ज्ञानरचनावाद के आधार पर दार्शनिक विश्लेषण करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 में ज्ञानरचनावाद के आधार पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 में ज्ञानरचनावाद के आधार पर सामाजिक विश्लेषण करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व **ए**न.ई.पी. 2020 और ज्ञानरचनावाद में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध में दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **ज्ञानरचनावाद** – ज्ञानरचनावाद जिसमे अधिगम को व्याख्यात्मक, पुर्न विचारात्मक एवं निर्माणात्मक प्रक्रिया कहा गया है जिसमें अधिगमकर्त्ता सक्रिय होकर भौतिक एवं सामाजिक संसार के साथ अन्तःक्रिया करते है।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- एन.ईपी. 2020

शोध का परिसीमन

- प्रस्तावित शोध कार्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व एन.ई.पी. 2020 की प्राप्त मुख्य विचारधारा तक सीमित है।
- ज्ञानरचनावाद का अध्ययन कुछ चुने विचारकों सुकरात, जॉन लाक जार्ज बर्कले, काण्ट, डेविड ह्यूम, जॉन डीवी, जीन प्याजे, आसुबेल और ब्रूनर तक सीमित रहेगा।

प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष

वर्तमान समय में शिक्षा में परम्परागत मूल्यों के साथ – साथ वैज्ञानिक चिन्तन को समाहित करना भी आश्यक है तथा विचारणीय तथ्य है क्योंकि शिक्षा की पूर्णता में ज्ञान रचनावाद का अवधारणा तभी फलीभूत होती है जब मानव सांस्कृतिक रूप से चैतन्य मूल्यों

के प्रति सजग तथा वैज्ञानिक विवेक व विचार के द्वारा व्यापक दृष्टिकोंण विकसित करने की क्षमता उत्पन्न करे, अस्तु वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में परम्परागत भारतीय चिन्तन तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोंण की 'पद्वति द्वय' का सुन्दर समायोजन अपेक्षित है क्योकि ज्ञान आधारित विश्व एक खुला मंच है जिसमें सृजनात्मकता एवं उपलब्धि के नवीन आयाम खुल रहे हैं आईन्सटीन के गम्भीर शब्दों के अनुसार मैने, अपने दीर्घ जीवन में एक सबक सीखा है कि यथार्थ के सम्मुख सारे विज्ञान का मानदंड आदिम तथा अपरिपक्व है फिर भी हमारे पास वही सबसे बहुमूल्य वस्तु है। केवल तर्कयुक्त होना ही वास्तविक चिंतन नहीं है चिंतन में सृजनात्मकता का अंश आवश्यक है। अतः विज्ञान व ज्ञान रचनावाद तथा आगामी एन.ई.पी. 2020 में तथा उसमें समाहित पम्परागत चिंतन के मध्य व्यवधान समाप्त होने चाहिए अन्यथा शिक्षा से विशेषज्ञ तो उत्पन्न होंगे परन्तु शिक्षित मानव नहीं तथा आधुनिक समय में यह अपेक्षित है कि ज्ञानरचनावाद व एन.ई.पी. 2020 में मुख्य निर्देशक सिद्धान्तों का पालन करते हुए एन.ई.पी. 2020 में मुख्य सृजनात्मकता यथार्थता पर जोर दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के जीवन में सकुशल नागरिक, स्वास्थ्य जीवन में उनकी जीवन कौशल की प्राथमिकता की ओर कदम उठाने की आवश्यकता देखने को मिले तथा समकालीन शिक्षा के द्वारा विकासशील मानव जीवन के दर्शन का निरूपण किया जाना चाहिए जिससे उसमें स्वानुभूति की भावना उत्पन्न हो सके ।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध का उपयोग बालकों के ज्ञान के विकास में बढोतरी के साथ – साथ ज्ञान की मीमांसा को समझ सकेंगे तथा सामाजिक विकास की अवधारणा को समझने में व सामाजिक नीति निर्धारकों के लिए तथा मुख्यतया एन.सी.एफ.05 एवं एन.ई.पी. 2020 में समाहित जीवन मूल्यों एवं मानवीय पहलुओं को अभिभावक, शिक्षक, इसकी विभिन्न अवधारणाओं को समझ सकेंगे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1	बर्गर, पी. और लुकमान टी. (1972)	:	''सामाजिक ज्ञानरचनावाद की वास्तविकता'', गार्डन सिटी न्यूयार्क
2	चैपमेन, एम. (1988)	:	''ज्ञानरचनावाद मूल्यांकन'', कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस
3	फोसनोट, सी.टी. (1996)	:	''ज्ञानरचनावाद : के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य और अभ्यास'', न्यूयार्क टीचर्स कालेन प्रेस
4	गुड़, बार एण्ड स्केट्स (1997)	:	''ए रिव्यू ऑफ रिसर्च मैथड्स इन एजुकेशन शिकागों''
5	कृष्ण, दया (1997)	:	''भारतीय दर्शन एक नवीन उपागम'', इण्डियन बुक सेन्टर, नई दिल्ली
6	कौल लोकेश (2008)	:	''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ'', विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली
7	सिंह अरूण कुमार (2011)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती भवन पब्लिशर्स अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली
8	सक्सेना एन आर (2011)	:	''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त'', आर लाल बुक डिपो, मेरठ
9	शर्मा आर.ए. (2011)	:	''शिक्षा अनुसंधान'', इंटरनेशनल पब्लिकेशन्स हाउस, मेरठ
10	दसवर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यक्रम एक रूपरेखा	:	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
11	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005	:	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

पत्र – पत्रिकाएँ

- गोस्वामी आयुष्मान (फरवरी 2013) – ''कंस्ट्रक्टिविज्म : शिक्षा की ज्ञानमीमांसा से एक विमर्श'', निवेदिता पत्रिका बनारस

वेबसाइटस

- http://shodh.inflibnet.ac.in/simple-search?query=EDUCATION&submit.x=-109&submit.y=-127&submit=Go
- http://www.eric.ed.gov/ERICWebPortal/search/simpleSearch.jsp?_pageLabel=ERICSearchResult&_urlType=action&newSearch=true&ERICExtSearch_Related_0=EJ209997
- http://www.aiaer.net/ejournal/vol20108/13.htm
- http://www.ncert.nic.in/ncerts/textbook/textbook.htm
- http://www.ncert.nic.in/indexh.html

**** Corresponding Author***

सुनीता चौहान

रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग

साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)

Email-sunitachouhan201085@gmail.com, Mob.- 9352990098